IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोकतांत्रिक मूल्यों की दृढ़ता में स्थानीय स्वषासन की भूमिका

संजय कुमार कनौजिया
ष्शोधार्थी, महर्षि दयानन्द सरस्वती विष्वविद्यालय, अजमेर (राज0)
डॉ0 आलोक कुमार श्रीवास्तव
ष्आचार्य–राजनीति विज्ञान (राज0 महाविद्यालय, अजमेर) महर्षि दयानन्द सरस्वती विष्वविद्यालय, अजमेर (राज0)

❖ **लेखसार** – भारतीय इतिहास की जड़ों की भांति भारतीय संस्कृति का वैभव एवं गौरव अत्यन्त गहरा और प्राचीन है इस संस्कृति के वैभव को गौरवषाली बनाने में हमारे मानवीय मूल्यों का विषेष योगदान है जो हमारी लोकतान्त्रिक आस्था एवं भावनाओं को प्रकट करते है। भारतीय समाज की जीवन शैली के आधारभूत तत्वों में हम लोकतान्त्रिक मूल्यों की भूमिका को अग्रणी रुप में देख सकते है और यह लोकतान्त्रिक मूल्यों के द्वारा ही हम स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते है। भारत की ग्रामीण जीवन शैली और उनके द्वारा किये जाने वाले आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक क्रियाकलापों, गतिविधियों में लोकतान्त्रिक मूल्यों का समावेष दिखाई देता है जिसके द्वारा मानवीय विकास की प्रक्रिया संचालित होती है और यह लोकतान्त्रिक मूल्यों को सषक्त बनाने की सतत बहुआयामी प्रक्रिया है जो स्थानीय स्वषासन के द्वारा श्रेष्ठतम रुप में दिखाई देती है।

❖ **मुख्य षब्द** – लोकतान्त्रिक मूल्य, क्रियाकलापों, अवधारणा रचनात्मक विकेन्द्रीकरण, समावेष, विवेकषीलता बहुआयामी, संवेदनषीलता, समग्र विकास।

❖ **प्रस्तावना** – भारतीय संस्कृति अपनी समृद्धि के साथ–साथ यह विभिन्न अवधारणाओं, मान्यताओं, विचारों, मूल्यों को भी समृद्धता प्रदान करती है जिसके कारण यहाँ लोकतान्त्रिक मूल्यों की अवधारणा प्राचीन समय से निरन्तर समय के साथ–साथ परिष्कृत रुप में जारी है। भारतीय समाज में स्थानीय स्वषासन के विभिन्न तत्वों का समावेष भी है जो प्राचीन समय निरन्तर इतिहास एवं व्यवस्थाओं के अनुरुप संचालित है। लोकतान्त्रिक मूल्यों एवं स्थानीय स्वषासन दोनों की निरन्तरता यहाँ स्वस्थ समाज के निर्माण की भूमिका का निर्वाह करने में रही है।

भारत स्वतंत्रता के पश्चात लोकतान्त्रिक मार्ग को अपनाया गया। यहाँ विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों, संषोधनों का एक मात्र उद्देष्य यह रहा है कि यहाँ लोकतंत्र को मजबूत बनाया जाये एवं उसे जमीनी

स्तर तक पहुंचाया जाये इस हेतु स्थानीय स्वषासन एक विष्वसनीय और श्रेष्ठ विकल्प है जो न केवल लोकतान्त्रिक मूल्यों के मूलभाव स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं बन्धुत्व को ध्यान में रखकर रचनात्मक दिषा में निरन्तर अग्रसर है।

❖ **अध्ययन के उद्देष्य** –

1ण लोकतान्त्रिक मूल्यों के महत्व का अध्ययन करना।

2ण स्थानीय स्वषासन एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों के बीच परस्पर संबंधों का अध्ययन करना।

3ण स्थानीय स्वषासन का लोकतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना में योगदान का अध्ययन करना।

4ण स्थानीय स्वषासन के द्वारा लोकतान्त्रिक मूल्यों को सषक्त बनाने का अध्ययन करना।

❖ **लोकतान्त्रिक मूल्यों की दृढ़ता में स्थानीय स्वषासन की भूमिका**– भारतीय संस्कृति सदैव मानवीय मूल्य एवं विष्व कल्याण की स्थापना हेतु केन्द्रीय भूमिका में रही है। हमारी संस्कृति को इस पथ पर चलने का मुख्य कारण लोकतान्त्रिक मूल्यों के प्रति पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा रखना रहा है। हमारे यहाँ विकास एवं व्यवस्था की प्रक्रिया को निरन्तर आगे बढ़ाया गया साथ ही समयानुसार इसमें बदलाव होने के कारण भी यहाँ लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उतराव–चढ़ाव का दौर भी रहा है परन्तु अन्त में हम सभी के पूर्ण विष्वास एवं आस्था के कारण हम लोकतन्त्र सषक्त मार्ग पर निरन्तर अग्रसर है।

भारतीय संवैधानिक प्रक्रियाओं द्वारा लोकतन्त्र की मजबूती हेतु समुचित एवं आवष्यक कदम सदैव उठायें गये है जो इस दिषा में ग्रामीण क्षेत्रों लोकतन्त्र को सषक्त बनाने एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों को जमीनी स्तर पहुंचाने में एक विष्वसनीय, ठोस और उद्देष्यपूर्ण विकल्प है। स्थानीय स्वषासन में 73वें और 74वें संविधान संषोधन अधिनियम के पश्चात लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण व्यवस्था को सुव्यवस्थित रुप प्रदान किया गया जो न केवल शक्तियों के केन्द्रीयकरण को समाप्त करता है बल्कि यह लोकतान्त्रिक मूल्यों के मूल भाव स्वतंत्रता, समानता, न्याय बन्धुत्व आदि को पूर्ण रुप से स्थापित करने का एक विष्वसनीय एवं सराहनीय कदम भी है। भारत में 1993 के बाद स्थानीय स्वषासन द्वारा जमीनी स्तर विभिन्न शक्तियों एवं अधिकारों के द्वारा प्रदान की गई।

यहाँ विभिन्न शक्तियों एवं अधिकारों की स्थापना के द्वारा लोकतंत्र के प्रति जवाबदेहिता एवं विवेकषीलता का जो परिचय दिया है वह हमारी स्वस्थ मानवीय विकास की प्रक्रिया के प्रति संवेदनषीलता को भी दर्षाता है। स्थानीय स्वषासन में नये प्रावधानों द्वारा अब जनता को विभिन्न अधिकार, शक्तियों, प्रावधानों के साथ–साथ विभिन्न विभागों की योजनाओं, कार्यक्रमों एवं नीतियों के द्वारा बहुआयामी विकास, लाभ, सुविधाओं का दायरा भी व्यापक स्तर प्राप्त हुआ है। स्थानीय स्वषासन के द्वारा अब स्थानीय जनता से सीधे एवं जमीनी स्तर तक प्रायः सभी क्षेत्रों में लोकतांत्रिक रूप में समग्र विकास समावेषित हुआ है।

भारत में स्थानीय स्वषासन में समग्र विकास की प्रक्रिया को और अधिक गति प्रदान करने हेतु तथा विष्व निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निर्वाह करने हेतु जो अभी नये बदलाव हो रहे है उससे न केवल लोकतंत्र मजबूत हुआ है बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को भी दृढ़ता प्राप्त हुई है।

सन्दर्भ

1. डॉ. अंजली वर्मा – भारत में पंचायती राज (2009)
2. डॉ. श्रीचरण वर्मा – पंचायती राज एवं लोकतंत्र (2001)
3. डॉ. रष्मि शुक्ला – प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण में सहभागिता (2012)
4. डॉ. के.के. शर्मा – भारत में पंचायतीराज (2012)
5. डॉ. हरीषचन्द शर्मा – भारत में स्थानीय प्रषासन (2006)
6. समसामयिक लेख
7. समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation